Core Values

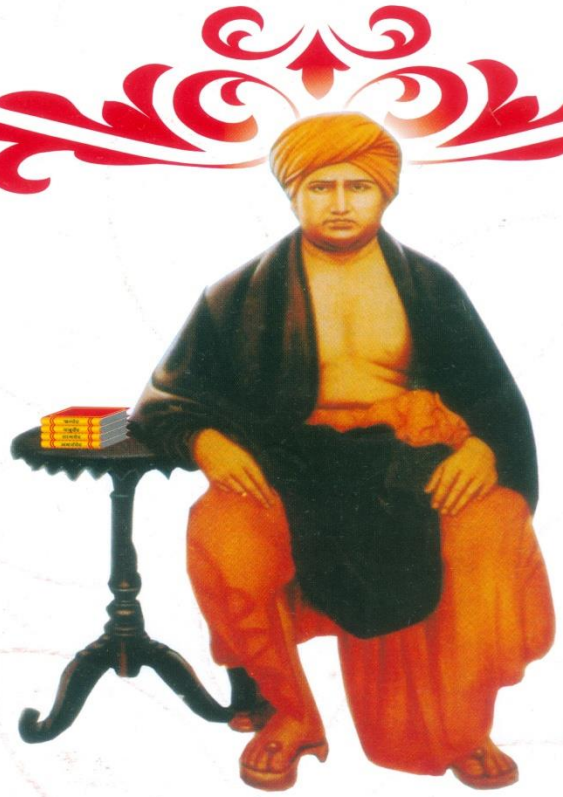

महर्षि दयानन्द सरस्वती

The moment your mind is filled with fear and helplessness, the very moment you remember that patriot who was ignited with vigorous zeal and life. Whenever your mind is overwhelmed with lust and pleasures, keep in your memory that dispassionate celebrate who kicked off the affluent lust and pleasures of wealth. Whenever your self respect bleeds to the extent that you feel eluded from others, the moment you remember that ascetic monk of the country who smiled away insults flayed by the ignorants. And if any how, any moment you are scared of the death, think of the *Sanyasi* who assured the safety of the person who administered him poison.

जिस क्षण तुम्हारे मन में दुर्बलता या कायरता का प्रवेश हो, उस क्षण जीवन और उत्साह से ओतप्रोत इस तेजस्वी देशभक्त को याद करो। जिस क्षण भी तुम्हारे हृदय में भोग विलास की आँधी चले, उस क्षण धन को ठोकर मारने वाले इस वीतराग बह्यचारी की ओर देखो। जिस क्षण अपमान से आहत तुम्हारी दृष्टि ऊपर न उठे, उस क्षण इस ओजस्वी मुख की कल्पना करो और यदि कभी तुम्हें मृत्यु से भय लगे तो विष पिलाने वाले को भी अभयदान देने वाले इस सन्यासी का स्मरण करो।

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझसे ही पाते प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता तू।
तेरा महान तेज है, छाया हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु – वस्तु में, तू हो रहा है विद्दमान।
तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते तेरी दया।
इश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर पर चला।

आर्य समाज के नियम

१. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

३. वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिएं।

६. संसार का उपकार करना इस संसार का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।

८. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१०. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।